समानता

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» समानता का महत्व और आदर्श

प्रश्न 1 (आसान). समानता के विचार को एक वाक्य में बताओ।
उत्तर – समानता का अर्थ है कि सभी मनुष्यों को समान महत्त्व और सम्मान मिलना चाहिए, चाहे वे कोई भी हों।

प्रश्न 2 (आसान). कौन से दो क्षेत्रों में समानता को एक 'powerful ideal' माना जाता है?
उत्तर – समानता को एक शक्तिशाली 'नैतिक (moral)' और 'राजनीतिक (political)' आदर्श माना जाता है।

प्रश्न 3 (मध्यम). हमें समानता के विचार की ज़रूरत क्यों है?
उत्तर – हमें समानता की ज़रूरत इसलिए है क्योंकि समाज में पद, धन, हैसियत या विशेषाधिकार के आधार पर अक्सर असमानताएँ होती हैं, और समानता का विचार इन असमानताओं के खिलाफ संघर्ष करने में मदद करता है।

प्रश्न 4 (कठिन). 'साझी मानवता' की अवधारणा से आप क्या समझते हैं और यह समानता से कैसे जुड़ी है?
उत्तर – 'साझी मानवता' का मतलब है कि रंग, लिंग, वंश या राष्ट्रीयता के फर्क के बावजूद सभी मनुष्य मूल रूप से समान हैं। इसी 'common humanity' के कारण सभी 'equal worth and respect' के हकदार हैं, और यह समानता के विचार का आधार है, जिससे 'universal human rights' जैसे विचार भी जन्म लेते हैं।

» विश्व और भारत में असमानता की स्थिति

प्रश्न 5 (आसान). भारत में किन क्षेत्रों में असमानता दिखती है? (कोई दो)
उत्तर – बिजली का कनेक्शन, नल का कनेक्शन, टेलीविजन।

प्रश्न 6 (आसान). दुनिया के कितने प्रतिशत अमीर लोग दुनिया की 54% आमदनी नियंत्रित करते हैं?
उत्तर – 10 प्रतिशत अमीर लोग।

प्रश्न 7 (मध्यम). ग्रामीण और शहरी परिवारों में किन सुविधाओं में सबसे ज़्यादा अंतर दिखता है? पाठ्यपुस्तक के आंकड़ों के आधार पर समझाओ।
उत्तर – ग्रामीण परिवारों में कार/जीप/वैन सिर्फ 2% के पास है जबकि शहरी परिवारों में 10% के पास है, और स्कूटर/मोपेड/मोटरसाइकिल भी ग्रामीण में 14% जबकि शहरी में 35% के पास। बिजली के कनेक्शन में भी बड़ा अंतर है - ग्रामीण में 55% जबकि शहरी में 93%।

प्रश्न 8 (कठिन). क्या पर्यावरण प्रदूषण में भी असमानता दिखती है? पाठ्यपुस्तक के आंकड़े के आधार पर समझाओ कि कौन से देश ज़्यादा प्रदूषण फैलाते हैं और क्यों?
उत्तर – हाँ, पर्यावरण प्रदूषण में भी असमानता दिखती है। 'पहली दुनिया के औद्योगिक देशों का हिस्सा दो तिहाई है' दुनिया के कुल कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में। ये देश 'कम से कम तीन गुना अधिक पानी, दस गुना ऊर्जा' का उपभोग करते हैं, जिससे प्रदूषण भी ज़्यादा होता है। 'ज़्यादा प्रदूषण फैलाने वाले बहुत सारे उद्योगों को विकसित देशों से हटाकर विकासशील देशों में लगाया जा रहा है', जो एक तरह की पर्यावरणीय असमानता को दर्शाता है।

» समानता का अर्थ: एक जैसा बर्ताव बनाम समान सम्मान

प्रश्न 9 (आसान). क्या समानता का मतलब हमेशा सबको एक ही काम देना है?
उत्तर – नहीं, समानता का मतलब सबको एक ही काम देना नहीं है। यह योग्यता और रुचि के अनुसार काम करने और समान अवसर पाने से जुड़ा है।

प्रश्न 10 (आसान). अगर एक स्कूल में सभी बच्चों को एक ही रंग की यूनिफॉर्म पहननी पड़ती है, तो क्या यह समानता का उदाहरण है?
उत्तर – हाँ, यह एक तरह से समानता का उदाहरण है क्योंकि यह बच्चों के बीच आर्थिक या सामाजिक स्थिति के आधार पर दिखने वाले अंतर को कम करने की कोशिश करता है।

प्रश्न 11 (मध्यम). किस स्थिति में लोगों के साथ 'अलग बर्ताव' करना भी समानता के सिद्धांत के खिलाफ नहीं होता?
उत्तर – जब यह 'अलग बर्ताव' किसी व्यक्ति की विशेष ज़रूरतों, योग्यता, या सामाजिक भूमिका के कारण हो, और इसका उद्देश्य 'समान अवसर' या 'समान सम्मान' सुनिश्चित करना हो। जैसे, सेना के जनरल को विशेष दर्जा।

प्रश्न 12 (कठिन). क्या समाज में सभी तरह के अंतरों को खत्म कर देना ही समानता है? अपने उत्तर का कारण बताओ।
उत्तर – नहीं, 'सभी तरह के अंतरों का उन्मूलन' समानता नहीं है। कुछ अंतर नैसर्गिक होते हैं (जैसे कोई अच्छा संगीतकार है तो कोई अच्छा वैज्ञानिक), या भूमिका-आधारित (जैसे प्रधानमंत्री का दर्जा)। समानता का अर्थ है कि इन अंतरों से किसी को 'कम सम्मान' न मिले और 'अवसरों में भेदभाव' न हो, विशेषकर जन्म या सामाजिक परिस्थितियों के कारण।

» अवसरों की समानता

प्रश्न 13 (आसान). अवसरों की समानता का क्या अर्थ है?
उत्तर – सभी को अपनी प्रतिभा विकसित करने और लक्ष्य पूरे करने के लिए समान अधिकार और अवसर मिलना।

प्रश्न 14 (आसान). क्या किसी बच्चे को गरीब होने के कारण स्कूल में दाखिला न देना अवसरों की समानता का उल्लंघन है?
उत्तर – हाँ, यह उल्लंघन है।

प्रश्न 15 (मध्यम). अगर एक खिलाड़ी बहुत अच्छा प्रदर्शन करके ओलंपिक में जाता है और दूसरा खिलाड़ी नहीं जा पाता, तो क्या यह अवसरों की समानता का उल्लंघन है? समझाइए।
उत्तर – नहीं, यह उल्लंघन नहीं है। यदि दोनों को प्रशिक्षण और प्रदर्शन के समान अवसर मिले थे, तो सफल होना या न होना उनकी व्यक्तिगत मेहनत और प्रतिभा पर निर्भर करता है। अवसरों की समानता का मतलब 'बराबर परिणाम' नहीं, बल्कि 'बराबर मौके' हैं।

प्रश्न 16 (कठिन). शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षित आवास जैसी बुनियादी सुविधाओं की 'उपलब्धता में असमानता' एक समाज को कैसे 'असमान और अन्यायपूर्ण' बनाती है?
उत्तर – यदि लोगों को ये बुनियादी सुविधाएं ही समान रूप से नहीं मिलतीं, तो वे अपनी क्षमताएं विकसित नहीं कर पाते और अपने लक्ष्यों तक नहीं पहुंच पाते। इससे कुछ वर्ग हमेशा पीछे रह जाते हैं और समाज में गहरी असमानता फैलती है, जो अंततः अन्याय को जन्म देती है क्योंकि सभी को आगे बढ़ने का उचित मौका ही नहीं मिला।

» प्राकृतिक और सामाजिक असमानताएँ

प्रश्न 17 (आसान). जो असमानता जन्म से मिली हो, उसे क्या कहते हैं?
उत्तर – प्राकृतिक असमानता

प्रश्न 18 (आसान). कौन सी असमानता समाज ने बनाई है?
उत्तर – सामाजिक असमानता

प्रश्न 19 (मध्यम). अगर कोई बच्चा पढ़ने में तेज़ है, पर उसे अच्छी किताबें नहीं मिल पातीं, तो यह कौन सी असमानता है?
उत्तर – सामाजिक असमानता (अवसरों की कमी के कारण)

प्रश्न 20 (कठिन). क्यों यह समझना ज़रूरी है कि कौन सी असमानता प्राकृतिक है और कौन सी सामाजिक?
उत्तर – क्योंकि हमें सिर्फ सामाजिक असमानताओं को ही खत्म करने की कोशिश करनी चाहिए, जो अन्यायपूर्ण हैं और जिन्हें बदला जा सकता है।

» समानता के तीन आयाम: राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक

प्रश्न 21 (आसान). वोट देने का अधिकार समानता के किस आयाम में आता है?
उत्तर – राजनीतिक समानता

प्रश्न 22 (आसान). अगर किसी को उसके धर्म के कारण स्कूल में दाखिला न मिले, तो यह किस तरह की असमानता है?
उत्तर – सामाजिक असमानता

प्रश्न 23 (मध्यम). एक देश में, जहाँ सभी को बोलने की आजादी है, पर कुछ वर्गों को बहुत कम वेतन मिलता है। यहाँ कौन सी समानता मौजूद है और कौन सी नहीं?
उत्तर – राजनीतिक समानता मौजूद है, लेकिन आर्थिक समानता नहीं है।

प्रश्न 24 (कठिन). क्या केवल राजनीतिक समानता होने से एक समाज पूरी तरह से न्यायपूर्ण बन सकता है? समझाइए।
उत्तर – नहीं, केवल राजनीतिक समानता से समाज पूरी तरह न्यायपूर्ण नहीं बन सकता। जब तक सामाजिक और आर्थिक समानता नहीं होगी, तब तक कुछ लोग दूसरों से पीछे रह जाएंगे और उन्हें मिलने वाले राजनीतिक अधिकारों का भी पूरा लाभ नहीं उठा पाएंगे। तीनों आयाम एक साथ ज़रूरी हैं।

» राजनीतिक समानता

प्रश्न 25 (आसान). कौन-सा अधिकार राजनीतिक समानता का हिस्सा है: 'रोजगार का अधिकार' या 'वोट देने का अधिकार'?
उत्तर – वोट देने का अधिकार

प्रश्न 26 (आसान). क्या 'संगठन बनाने की आज़ादी' राजनीतिक समानता में शामिल है?
उत्तर – हाँ

प्रश्न 27 (मध्यम). एक लोकतांत्रिक देश में 'राजनीतिक समानता' क्यों आवश्यक है?
उत्तर – यह नागरिकों को शासन-प्रशासन में भाग लेने और अपना विकास करने में सक्षम बनाती है।

प्रश्न 28 (कठिन). क्या राजनीतिक समानता अपने आप में एक न्यायपूर्ण समाज बनाने के लिए पर्याप्त है? कारण सहित समझाओ।
उत्तर – नहीं, राजनीतिक समानता केवल औपचारिक अधिकार देती है। समाज में सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ बनी रह सकती हैं, जो इन अधिकारों के प्रभावी उपयोग को रोकती हैं। इसलिए, सामाजिक और आर्थिक समानता भी ज़रूरी है।

» सामाजिक समानता

प्रश्न 29 (आसान). सामाजिक समानता का अर्थ क्या है?
उत्तर – समाज में किसी भी तरह का भेदभाव न होना और सबको समान अवसर मिलना।

प्रश्न 30 (आसान). अगर किसी बच्चे को उसकी जाति के कारण स्कूल में दाखिला न मिले, तो यह किस समानता का उल्लंघन है?
उत्तर – सामाजिक समानता।

प्रश्न 31 (मध्यम). बुनियादी स्वास्थ्य और शिक्षा सामाजिक समानता से कैसे जुड़ी है?
उत्तर – क्योंकि ये सुविधाएँ हर व्यक्ति को बिना किसी सामाजिक भेदभाव के मिलनी चाहिए ताकि उन्हें आगे बढ़ने का समान अवसर मिले।

प्रश्न 32 (कठिन). महिलाओं को पुरुषों के समान 'उत्तराधिकार का अधिकार' न मिलना सामाजिक समानता के लिए चुनौती क्यों है?
उत्तर – क्योंकि यह लिंग के आधार पर भेदभाव है, जो महिलाओं को संपत्ति और अवसरों से वंचित करता है और उन्हें पुरुषों के समान सामाजिक दर्जा नहीं देता।

» आर्थिक समानता: मार्क्सवाद और उदारवाद के दृष्टिकोण

प्रश्न 33 (आसान). मार्क्सवाद के अनुसार, आर्थिक असमानता का मुख्य कारण क्या है?
उत्तर – निजी स्वामित्व (private ownership) या महत्वपूर्ण आर्थिक संसाधनों का निजी नियंत्रण।

प्रश्न 34 (आसान). उदारवादी आर्थिक असमानता से निपटने के लिए किस पर जोर देते हैं?
उत्तर – समान अवसर (equal opportunity) और खुली प्रतिस्पर्धा (open competition) पर।

प्रश्न 35 (मध्यम). मार्क्सवाद और उदारवाद के बीच एक मुख्य अंतर बताइए कि वे आर्थिक असमानता को कैसे देखते हैं।
उत्तर – मार्क्सवाद निजी संपत्ति को असमानता की जड़ मानता है और इसे खत्म करने की बात करता है, जबकि उदारवाद समान अवसरों पर ज़ोर देता है और मानता है कि अगर अवसर समान हैं तो कुछ हद तक असमानताएँ स्वाभाविक हैं।

प्रश्न 36 (कठिन). अगर सरकार सबको मुफ्त शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा दे, लेकिन फिर भी कुछ लोगों के पास बहुत ज्यादा पैसा और दूसरों के पास बहुत कम हो, तो मार्क्सवादी और उदारवादी इस स्थिति को कैसे देखेंगे?
उत्तर – मार्क्सवादी इसे अभी भी समस्या मानेंगे क्योंकि निजी संपत्ति और संसाधनों का नियंत्रण कुछ ही लोगों के हाथ में होगा, जिससे सच्ची समानता नहीं आएगी। उदारवादी कहेंगे कि अगर सबको शिक्षा और स्वास्थ्य के समान अवसर मिल रहे हैं, तो धन की असमानता उतनी बड़ी समस्या नहीं है, क्योंकि लोगों को अपनी प्रतिभा और मेहनत से आगे बढ़ने का मौका मिला है।

» नारीवाद और लैंगिक समानता

प्रश्न 37 (आसान). नारीवाद किस प्रकार के अधिकारों का पक्ष लेता है?
उत्तर – स्त्री-पुरुष के समान अधिकारों का।

प्रश्न 38 (आसान). पितृसत्ता का क्या अर्थ है?
उत्तर – एक ऐसी व्यवस्था जिसमें पुरुष को स्त्री से अधिक महत्त्व और शक्ति दी जाती है।

प्रश्न 39 (मध्यम). एक उदाहरण देकर स्पष्ट करें कि कैसे कोई असमानता जैविक न होकर लैंगिक हो सकती है।
उत्तर – बच्चे को जन्म देना जैविक है, लेकिन उसकी पूरी देखभाल सिर्फ़ माँ करेगी यह लैंगिक (सामाजिक) भूमिका है।

प्रश्न 40 (कठिन). आपके अनुसार, पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं पर 'दोहरा बोझ' कैसे पड़ता है? इसपर नारीवादी क्या कहते हैं?
उत्तर – पितृसत्ता में महिलाएं घर के 'निजी' काम (जैसे खाना बनाना, बच्चे पालना) और बाहर के 'सार्वजनिक' काम (नौकरी) दोनों करती हैं, जिससे उन पर 'दोहरा बोझ' पड़ता है। नारीवादी इस विभाजन को चुनौती देते हैं और इसे बदलने की वकालत करते हैं।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. फ्रांसीसी क्रांति का मुख्य नारा क्या था और वह समानता के विचार से कैसे जुड़ा था?

› पहला कदम, हम क्रांति के नारे को पहचानेंगे। फ्रांसीसी क्रांति का नारा था 'Liberty, Equality, Fraternity' यानी 'स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा'।

› दूसरा कदम, हम समझेंगे कि यह समानता से कैसे जुड़ा। उस समय फ्रांस में 'feudal lords, the nobility, and the monarchy' यानी बड़े-बड़े ज़मींदार, अमीर लोग और राजा का राज था, जो आम लोगों से ज़्यादा अधिकार रखते थे।

› तीसरा कदम, क्रांतिकारियों ने इस 'inequality of status, wealth, and privilege' के खिलाफ आवाज़ उठाई। वे सब के लिए बराबर अधिकार, बराबर सम्मान और बराबर मौके चाहते थे।

› तो 'Equality' का मतलब था कि राजा या ज़मींदार हों या आम आदमी, कानून के सामने और समाज में सबको एक बराबर माना जाए, किसी को 'special privileges' न मिलें।

उत्तर – फ्रांसीसी क्रांति का मुख्य नारा 'स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा' था। इसमें 'समानता' का मतलब था कि समाज में किसी भी व्यक्ति को उसके जन्म, पद, या धन के आधार पर कोई विशेष अधिकार या कमतर नहीं समझा जाएगा, बल्कि सभी मनुष्यों को समान महत्व और सम्मान मिलेगा।

उदाहरण 2. पाठ्यपुस्तक में दिए गए आंकड़ों के अनुसार, विश्व में 50 सबसे अमीर लोगों की सामूहिक आय और 40 करोड़ सबसे गरीब लोगों की सामूहिक आय की तुलना करें।

› पहला बिंदु कहता है: 'दुनिया के 50 सबसे अमीर आदमियों की सामूहिक आमदनी दुनिया के 40 करोड़ सबसे गरीब लोगों की सामूहिक आमदनी से अधिक है।'

› इसका मतलब है कि सिर्फ 50 लोग, जो बहुत अमीर हैं, वो इतने सारे 40 करोड़ गरीब लोगों से भी ज़्यादा कमाते हैं।

› यह दिखाता है कि धन का वितरण कितना असमान है।

उत्तर – दुनिया के 50 सबसे अमीर लोगों की सामूहिक आय, 40 करोड़ सबसे गरीब लोगों की सामूहिक आय से भी अधिक है, जो विश्व में धन की अत्यधिक असमानता को दर्शाता है।

उदाहरण 3. एक गांव में पंचायत के चुनाव हो रहे हैं। क्या सबको एक जैसी सुविधा मिलनी चाहिए, या कुछ अंतर हो सकता है? अगर हाँ, तो कैसा अंतर सही है और कैसा गलत?

› पहला कदम: हमें यह देखना होगा कि चुनाव में 'समान सम्मान' और 'समान अवसर' कैसे सुनिश्चित किए जाएं।

› दूसरा कदम: हर वोटर को बिना किसी भेदभाव के वोट डालने का 'समान अवसर' मिलना चाहिए, चाहे वह किसी भी जाति, धर्म या लिंग का हो। सबको 'समान सम्मान' मिले।

› तीसरा कदम: लेकिन, अगर कोई उम्मीदवार विकलांग है और उसे पोलिंग बूथ तक जाने के लिए व्हीलचेयर या किसी और मदद की ज़रूरत है, तो उसे यह सुविधा मिलनी चाहिए। यह 'एक जैसा बर्ताव' नहीं है (क्योंकि बाकी लोगों को व्हीलचेयर नहीं चाहिए), बल्कि 'समान अवसर' सुनिश्चित करने के लिए ज़रूरी है ताकि वह भी आसानी से अपना वोट डाल सके।

› चौथा कदम: अगर कोई कहे कि 'मैं प्रभावशाली हूँ इसलिए मुझे लाइन में नहीं लगना', तो यह 'असमानता' है और 'अन्यायपूर्ण' है। इस तरह के अंतर को हम अस्वीकार करते हैं।

उत्तर – हाँ, चुनाव में 'समान सम्मान' और 'समान अवसर' सबको मिलने चाहिए, लेकिन 'एक जैसा बर्ताव' हमेशा ज़रूरी नहीं। विशेष ज़रूरतों वाले को सुविधा देना सही है (समान अवसर के लिए), पर प्रभावशाली होने के आधार पर विशेष छूट देना गलत है (समान सम्मान के खिलाफ)।

उदाहरण 4. दो बच्चे, राम और सीता, एक ही गाँव के हैं। राम के माता-पिता किसान हैं और सीता के माता-पिता डॉक्टर। दोनों इंजीनियर बनना चाहते हैं। अवसरों की समानता के सिद्धांत के अनुसार, समाज को उनके प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए?

› अवसरों की समानता का सिद्धांत कहता है कि किसी भी व्यक्ति के जन्म, आर्थिक स्थिति या लिंग के आधार पर उसके अवसरों में भेदभाव नहीं होना चाहिए।

› राम और सीता दोनों को अपनी प्रतिभा विकसित करने और इंजीनियर बनने के लक्ष्य को पूरा करने के लिए 'समान अधिकार और अवसर' मिलने चाहिए।

› इसका मतलब है कि उन्हें अच्छी शिक्षा तक पहुंच, किताबें, और मार्गदर्शन बिना किसी बाधा के मिलना चाहिए।

› उनके माता-पिता की आर्थिक स्थिति या व्यवसाय उनके शिक्षा के अवसरों को प्रभावित नहीं करना चाहिए।

उत्तर – समाज को राम और सीता दोनों को इंजीनियर बनने के लिए शिक्षा और अन्य सुविधाओं के 'समान अवसर' प्रदान करने चाहिए, ताकि वे अपनी क्षमता और कड़ी मेहनत के आधार पर अपने लक्ष्य तक पहुंच सकें।

उदाहरण 5. कुछ लोग पहाड़ों पर आसानी से चढ़ जाते हैं जबकि कुछ नहीं चढ़ पाते। यह कौन सी असमानता है? और अगर कोई व्यक्ति सिर्फ इसलिए ऊँची पोस्ट पर नहीं पहुँच पा रहा क्योंकि उसका रंग काला है, तो यह कौन सी असमानता है?

› पहला वाक्य: 'कुछ लोग पहाड़ों पर आसानी से चढ़ जाते हैं जबकि कुछ नहीं चढ़ पाते।' यह व्यक्ति की शारीरिक क्षमता से जुड़ा है जो जन्मगत या प्राकृतिक हो सकती है। तो यह 'प्राकृतिक असमानता' है।

› दूसरा वाक्य: 'अगर कोई व्यक्ति सिर्फ इसलिए ऊँची पोस्ट पर नहीं पहुँच पा रहा क्योंकि उसका रंग काला है।' यहाँ पर व्यक्ति की क्षमता नहीं, बल्कि समाज द्वारा बनाया गया भेदभाव एक बाधा बन रहा है (रंग के आधार पर)। तो यह 'सामाजिक असमानता' है।

› निष्कर्ष: प्राकृतिक असमानताएँ अक्सर स्वीकार्य होती हैं (अगर वे किसी को नुकसान न पहुंचाएं), जबकि सामाजिक असमानताएँ अस्वीकार्य और अन्यायपूर्ण होती हैं।

उत्तर – पहाड़ पर चढ़ने वाली असमानता 'प्राकृतिक असमानता' है। रंग के आधार पर ऊँची पोस्ट पर न पहुँच पाना 'सामाजिक असमानता' है।

उदाहरण 6. अगर एक शहर में सभी को चुनाव लड़ने का अधिकार है, लेकिन कुछ खास जाति के लोगों को अच्छी नौकरी नहीं मिलती, तो यहाँ कौन से आयाम की समानता है और कौन से की कमी है?

› पहला कदम: हमें देखना है कि किस तरह के अधिकार की बात हो रही है। 'चुनाव लड़ने का अधिकार' यह 'राजनीतिक' अधिकार से जुड़ा है।

› दूसरा कदम: अब दूसरी बात देखते हैं – 'खास जाति के लोगों को अच्छी नौकरी नहीं मिलती।' नौकरी और कमाई का संबंध 'आर्थिक' पहलू से है, और जाति के आधार पर भेदभाव 'सामाजिक' पहलू से।

› तीसरा कदम: तो हम समझते हैं कि चुनाव लड़ने का अधिकार होने का मतलब है 'राजनीतिक समानता' मौजूद है।

› चौथा कदम: लेकिन जाति के कारण अच्छी नौकरी न मिलना यह 'सामाजिक' और 'आर्थिक' दोनों तरह की असमानता को दर्शाता है।

उत्तर – यहाँ राजनीतिक समानता मौजूद है, लेकिन सामाजिक और आर्थिक समानता की कमी है।

उदाहरण 7. भारत में 'राजनीतिक समानता' के दो प्रमुख उदाहरण बताइए और समझाइए कि ये कैसे महत्वपूर्ण हैं?

› पहला उदाहरण है 'मतदान का अधिकार'। भारत में 18 साल या उससे अधिक उम्र के हर नागरिक को वोट देने का अधिकार है, चाहे उसकी जाति, धर्म, लिंग या आर्थिक स्थिति कुछ भी हो।

› यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे हर नागरिक को सरकार चुनने और अपने प्रतिनिधि चुनने में बराबर की हिस्सेदारी मिलती है। 'One person, one vote, one value' का सिद्धांत यहाँ लागू होता है।

› दूसरा उदाहरण है 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता'। भारतीय संविधान हर नागरिक को अपनी बात कहने, अपने विचार व्यक्त करने की आज़ादी देता है।

› यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे लोग अपनी समस्याओं को उठा सकते हैं, सरकार की नीतियों पर चर्चा कर सकते हैं और एक जागरूक समाज का निर्माण कर सकते हैं। यह सरकार को जवाबदेह भी बनाता है।

उत्तर – भारत में मतदान का अधिकार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता राजनीतिक समानता के प्रमुख उदाहरण हैं, जो नागरिकों को शासन-प्रशासन में सक्रिय रूप से भाग लेने और अपना विकास करने में सक्षम बनाते हैं।

उदाहरण 8. एक गाँव में 'कमजोर वर्ग' के लोगों को मंदिर में प्रवेश करने से रोक दिया जाता है। बताइए यह किस प्रकार की असमानता है और इसे कैसे दूर किया जा सकता है?

› यह 'सामाजिक असमानता' का एक उदाहरण है, क्योंकि यहाँ 'सामाजिक स्थिति' के आधार पर भेदभाव हो रहा है।

› इसे दूर करने के लिए, सरकार 'कानूनी कदम' उठा सकती है, जैसे भेदभाव के खिलाफ कानून लागू करना।

› लोगों में 'जागरूकता' बढ़ाई जानी चाहिए कि सभी धर्मों और जातियों के लोग समान हैं।

› स्थानीय प्रशासन को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ऐसे भेदभाव को रोका जाए और दोषियों पर कार्रवाई हो।

उत्तर – यह सामाजिक असमानता है जिसे कानूनी हस्तक्षेप, जागरूकता और प्रशासनिक कार्रवाई से दूर किया जा सकता है।

उदाहरण 9. मार्क्सवाद और उदारवाद के दृष्टिकोण से आर्थिक असमानता को कैसे समझा जाए और उससे निपटने के लिए क्या तरीके सुझाए जाते हैं?

› पहले हम मार्क्सवादी दृष्टिकोण को समझते हैं। मार्क्सवादी मानते हैं कि "खाईनुमा असमानताओं का बुनियादी कारण" यानी गहरी असमानताओं की जड़ "महत्वपूर्ण आर्थिक संसाधनों... का निजी स्वामित्व" है।

› मार्क्सवाद के अनुसार, जो लोग इन संसाधनों के मालिक होते हैं, उन्हें सिर्फ़ आर्थिक नहीं, बल्कि "राजनीतिक ताकत भी" मिल जाती है, जिससे वे राज्य की नीतियों को प्रभावित करते हैं।

› इससे निपटने के लिए मार्क्सवादी सुझाव देते हैं कि "आवश्यक संसाधनों और अन्य तरह की संपत्ति पर जनता का नियंत्रण" होना चाहिए, ताकि सभी को समान अधिकार मिलें।

› अब उदारवादी दृष्टिकोण पर आते हैं। उदारवादी मानते हैं कि "जीवनयापन के न्यूनतम स्तर और समान अवसर" प्रदान करने में राज्य को हस्तक्षेप करना चाहिए।

› लेकिन उदारवादी यह भी कहते हैं कि "स्वतंत्र और निष्पक्ष परिस्थितियों में लोगों के बीच प्रतिस्पर्धा" ही सबसे "न्यायपूर्ण और कारगर उपाय" है धन के वितरण का।

› उदारवादियों के लिए, अगर प्रतिस्पर्धा खुली और स्वतंत्र है, तो असमानताएँ समस्या नहीं हैं, बल्कि वे केवल ऐसी "अन्यायी और गहरी असमानताओं" को समस्या मानते हैं जो व्यक्ति को अपनी क्षमताएँ विकसित करने से रोकती हैं।

उत्तर – मार्क्सवादी आर्थिक असमानता का मूल कारण निजी स्वामित्व मानते हैं और सार्वजनिक नियंत्रण का सुझाव देते हैं।

उदारवादी समान अवसर और खुली प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देते हैं, और उनका मानना है कि अगर अवसर बराबर हों तो असमानताएँ स्वाभाविक हैं।

उदाहरण 10. नारीवादी दृष्टिकोण के अनुसार, स्त्री-पुरुष असमानता का मूल कारण क्या है? समझाइए कि 'लैंगिक' शब्द का प्रयोग 'जैविक' से किस प्रकार भिन्न है।

› पहला, हमें समझना होगा कि नारीवाद 'स्त्री-पुरुष असमानता को प्राकृतिक मानने' से मना करता है। 'नारीवादियों का मानना है कि इन असमानताओं को बदला जा सकता है।'

› दूसरा, नारीवाद कहता है कि इस असमानता का मूल कारण 'पितृसत्ता' है। 'पितृसत्ता से आशय एक ऐसी सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था से है, जिसमें पुरुष को स्त्री से अधिक महत्व और शक्ति दी जाती है।'

› तीसरा, 'लैंगिक' (Gender) और 'जैविक' (Sex) में अंतर को समझें। 'जैविक या लिंग-भेद (Sex) प्राकृतिक और जन्मजात होता है', यह शरीर से जुड़ा है, जैसे कोई लड़का है या लड़की।

› चौथा, जबकि 'लैंगिकता (Gender) समाजजनित है', यानी समाज तय करता है कि लड़के और लड़कियों की क्या भूमिकाएं होंगी, कौन से काम उनके लिए सही होंगे, आदि। 'नारीवादियों ने हमें सिखाया है कि स्त्री-पुरुष असमानता का अधिकांश प्रकृति ने नहीं समाज ने पैदा किया है।'

› निष्कर्ष में, नारीवादी मानते हैं कि स्त्री-पुरुष असमानता जैविक नहीं बल्कि सामाजिक है, और इसका कारण पितृसत्ता है जिसे बदला जा सकता है।

उत्तर – नारीवादी दृष्टिकोण के अनुसार, स्त्री-पुरुष असमानता का मूल कारण 'पितृसत्ता' है, जो एक समाज-निर्मित व्यवस्था है, न कि प्राकृतिक। 'लैंगिक' (Gender) शब्द समाज द्वारा निर्मित भूमिकाओं और अपेक्षाओं को दर्शाता है, जबकि 'जैविक' (Sex) प्राकृतकि, शारीरकि भेदों को।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• असमानता के ये आंकड़े सीधे याद करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन आपको इन आंकड़ों से मिलने वाले निष्कर्षों को समझना और उन्हें अपने शब्दों में व्यक्त करना आना चाहिए। तुलनात्मक विश्लेषण (जैसे ग्रामीण vs शहरी) वाले प्रश्न आ सकते हैं।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर एक प्रश्न आता है जिसमें पूछा जाता है कि क्या समानता का अर्थ एक जैसा बर्ताव है? आपको उदाहरणों के साथ स्पष्ट करना होगा कि समान सम्मान और अवसर ज़्यादा महत्वपूर्ण हैं।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर 'प्राकृतिक और सामाजिक असमानताओं में अंतर स्पष्ट करें' या 'कौन सी असमानताएँ अस्वीकार्य हैं और क्यों' जैसे प्रश्न आते हैं। इसे अच्छे से समझना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर सीधे सवाल आते हैं, इसलिए 'political, social, and economic equality' की परभिाषाएं और उदाहरण अच्छे से याद कर लेना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3 से 5 अंकों के प्रश्न के रूप में आता है। 'सामाजिक समानता' की परिभाषा, इसके महत्व और इसे सुनिश्चित करने के तरीकों पर ध्यान दें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर मार्क्सवाद और उदारवाद के दृष्टिकोणों पर तुलनात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं, इसलिए दोनों के मुख्य बिंदुओं को ध्यान से समझना और लिखना ज़रूरी है।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'पितृसत्ता' और 'लैंगिक समानता' की परिभाषा और 'जैविक' व 'लैंगिक' के बीच अंतर को उदाहरणों सहित स्पष्ट करना सीखें। इस पर अक्सर निबंध या दीर्घ उत्तरीय प्रश्न आते हैं।

एक नज़र में रिवीज़न

› समानता आदर्श है, पर विश्व व भारत में भारी आर्थिक-सामाजिक असमानता है।

› समानता = समान सम्मान + समान अवसर (एक जैसा बर्ताव समानता)

› प्राकृतिक असमानता (जन्मगत); सामाजिक असमानता (समाजजनित, बदल सकते हैं, अन्यायपूर्ण)
› समानता के तीन आयाम: राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक.
› सामाजिक समानता = भेदभाव रहित समाज, सबको समान अवसर और बुनियादी सुविधाएं।
› मार्क्सवाद: निजी संपत्ति असमानता का मूल; उदारवाद: समान अवसर, खुली प्रतिस्पर्धा।
› नारीवाद = स्त्री-पुरुष समानता, पितृसत्ता का विरोध, Gender Sex